Nagpal Nursing Home
Near Sri Darbar Sahib, Amritsar.
Phone:0183-2556001, 2556343

Sukh Sagar Hospital
Near Anand Avenue,
Phone: 0183-5095881, 2501081

शूगर के रोग में नाड़ी संस्थान की उलझनें

हमारा दिमाग नाड़ी संस्थान का मुख्य केन्द्र है।

हमारा दिमाग नाड़ी संस्थान का मुख्य केन्द्र है। हमारे शरीर के अंगों में होने वाली हर चाल मस्तिष्क से निकलने वाली तरंगों से होती है। यह तरंगे नाड़ी संस्थान से होती हुई अंगों में पहुंचती है। हमारे अंगों की सूझ बूझ भी इसी नाड़ी संस्थान के द्वारा दिमाग तक पहुंचती हैं। आँख, नाक, कान, गले और जीभ का पुरा नियन्त्रण मस्तिष्क के पास होता है।

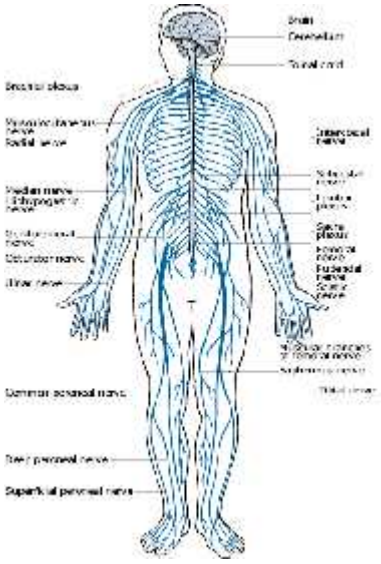

रीढ़ की अस्थि में स्थित महानाड़ी (Spinal Cord) शरीर के सारे अंगों को दिमाग के साथ जोड़ती है। गर्दन के नीचे वालों अंगों का नियन्त्रण रीढ़ की हडडी से निकलने वाली नाड़ीयों द्वारा होता है। शूगर के रोग में नाड़ी संस्थान की कार्य कुशलता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

नाड़ी संस्थान की उलझनों के क्या चिन्ह होते है ?

निम्नलिखित चिन्हों में से कोई भी चिन्ह किसी रोगी में हो सकते हैं:

हाथों पैरों का सोना, अंगों मे कीड़ियों के चलने जैसा महसूस होना, अंगों में से सेक निकलना, तेज़ दर्द होना या उनका शीत हो जाना, नसों का खिचाव होना, स्पर्श का कम महसूस होना।

कब्ज होना या टटीयां लगना, एकदम ज्यादा भूख लगनी, अफारा होना, पेट भरा सा प्रतीत होना। चक्कर आने, पेशाब करने की शीघ्रता महसूस होना और पेशाब अपने आप निकल जाना।

सैक्स की कमज़ोरी होना और दिल की धड़कन महसूस होना।

नाड़ी संस्थान की कमज़ोरी की जांच कैसे की जा सकती है ?

अगर नाड़ी संस्थान बहुत कमज़ोर हो जाऐ तो (Monofilament) नामक प्लास्टिक के तीले का पैर को आभास नहीं होता। इसके अतिरिक्त (Biothesiometer) नामक मशीन से नाड़ी संस्थान के क्षीण हो जाने की अवस्था का पता लगाया जा सकता ळें

नाड़ी संस्थान को क्षीण होने से कैसे बचा सकते हैं ?

यदि प्रारम्भ से ही शूगर, रक्त चाप और वसा का अच्छा नियन्त्रण रखें तो नाड़ी संस्थान के कमज़ोर हो जाने को काफी

समय तक टाला जा सकता है। ताज़े फल, सब्ज़ियों का प्रयोग और नित्य सैर या कसरत भी इसके लिये सहायक होते है।